

स्टार संडे

संजय सीरीज
बी.ए., बी.एस-सी., बी.कॉम., एम.ए. की सेमेस्टर, प्राइवेट तथा भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, दूरवर्ती परीक्षाओं के लिए अक्षरश पढ़े
गया प्रसाद अग्रवाल एण्ड संस, सतना

मानवता...मान्यताएं और महामारियां

ज ब सृष्टि का सृजन हुआ तो सबसे पहले किस धर्म की शुरुआत हुई थी? हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, यहूदी, नॉर्स या माया, हर किसी की अपनी मान्यताएं हैं। हर धर्म खुद को दूसरे से श्रेष्ठ साबित करने में लगा हुआ है। कई धर्मों ने पूर्व में अपनी मान्यताओं के नाम पर हिंसा की, कुछ तो आज भी कर रहे हैं। अपने धार्मिक दंभों के बीच, इंसान खुद यह बात भूल गया कि जब मनुष्य का जन्म हुआ, तो उसके पास सिर्फ एक ही धर्म था, मानवता। इस भौतिक दुनिया की हमारी कोरी मान्यताओं पर, चाहे वह हमारे धर्म से जुड़ी हो या फिर सामाजिक स्थिति से, वक्त-वक्त पर किसी न किसी रूप में प्रकृति तमाचा मारती है, जो साथ ही यह सिखाती भी है कि तुम चाहे किसी भी धर्म के अनुयायी हो, तुम्हारी सामाजिक स्थिति और मान्यता चाहे जो भी हो, लेकिन सबसे पहले तुम एक इंसान हो, बस एक इंसान।

योगेश पटेल

वह वक्त भी कुछ ऐसा ही था

जाते-जाते साल 2019 इंसानियत को नोवेल कोरोना वायरस 'कोविड-19' का अभिशाप दे गया। पिछले सौ सालों की सबसे बड़ी महामारी, जिसकी चपेट में इस समय लगभग पूरी दुनिया है। इस महामारी की मार जिस वक्त इस दुनिया पर पड़ी, उस समय को आप तीसरे विश्व युद्ध के संभावित आगाज़ का समय भी मान सकते हैं। इरान और संयुक्त राज्य दोनों एक-दूसरे की तरफ आंखें तरेर रहे थे। दोनों में से कोई न तो पीछे हटने को तैयार था, न ही झुकने को। दूसरी तरफ अंतरराष्ट्रीय समुदाय में चीन की बढ़ती घुसपैठ नियमित रूप से उसके पड़ोसियों को परेशान करती आ ही रही थी। वैश्विक अर्थव्यवस्था की धीमी चाल और लगभग युद्ध के मुहाने पर खड़ी दुनिया, ये दो ऐसी बातें थी, जो अब से करीब सौ साल पहले भी देखने को मिली थी।

बात है बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक की। दुनिया भर में तेजी से फैलती औद्योगिक क्रांति की वजह से सभी बड़े देश, खास तौर पर यूरोपीय देश ऐसे उपनिवेश चाहते थे, जहां से वे कच्चा माल पा सके और अपनी बनाई चीजें बेच सकें। एशियाई, अफ्रीकी और अमेरिकी देशों पर कब्जा भी इसी वजह से किया गया था। इस तरह की लालसा के बीच राष्ट्रों के बीच अविश्वास और वैमनस्य बढ़ता गया और फिर एक समय आया, जब युद्ध अनिवार्य हो गया। ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकारी की हत्या के बाद उसने सर्बिया के खिलाफ युद्ध का ऐलान कर दिया और पूरा यूरोप दो गुटों में बंट गया। बेल्जियम और लक्ज़मबर्ग जैसे जो देश तटस्थ थे, उन पर भी कब्जा कर लिया गया। राजाओं, राजनेताओं और उद्योगपतियों के अहं और इच्छाओं की पूर्ति में डेढ़ करोड़ से ज्यादा सैनिकों और आम लोगों की मौत हुई। लेकिन यह सिर्फ यहीं तक सीमित नहीं था। मानव इतिहास में पहली बार, भारी आबादी ने लंबे सफर तय किए। कई एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में गए। और सफर करने वाले ये लोग, अपने साथ लेकर गए बीसवीं शताब्दी की सबसे बड़ी महामारी 'स्पेनिश फ्लू'।





बीमारियों का वैश्विकरण

आधुनिक दुनिया की जो सबसे बड़ी उपलब्धि है, वह है आज के समय का तेज परिवहन, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों को उन जगहों तक भी पहुंचने की सहूलियत दी है जहां पहुंचना पहले काफी हद तक मुश्किल लगता था। लेकिन समाज की यह उपलब्धि ही कहीं न कहीं दुनिया के लिए अभिशाप भी बनकर आई है। कैसे? सन् 1999 में यूएसए में एक बीमारी फैली जिसे नाम दिया गया 'वेस्ट नाइल फीवर'। 'वेस्ट नाइल फीवर' के फैलने की वजह ज़ीका, डेंगू और येलो फीवर वायरस का रिश्तेदार 'वेस्ट नाइल वायरस' था। ऐसा माना जाता है कि अफ्रीका के युगांडा में पनपा यह वायरस एक मच्छर के ज़रिये यूएसए पहुंचा। यह मच्छर एक प्लेन में यूएसए पहुंच गया था। हवाई सफर के इस्तेमाल के साथ, दुनिया के किसी भी हिस्से में जाना-आना बहुत आसान हो गया है। लेकिन इसके साथ बहुत ही कम समय में किसी वायरस को दुनिया भर में फैलाना भी आसान हो गया है, फिर चाहे स्पेनिश फ्लू हो स्वाइन फ्लू और बर्ड फ्लू, या कोविड-19। लोग दूसरे देश जाते हैं, वहां किसी वायरस से संक्रमित होते हैं, और इससे पहले कि उनमें लक्षण दिखाई देना शुरू हों, वे सकुशल अपने देश वापस आ जाते हैं, एक नए वायरस के साथ। बीते सौ सालों में फैली ज्यादातर महामारियों में यही पैटर्न रहा है।

इंसानियत ही है असली धर्म

कोरोना के महामारी का रूप लेते ही, दुनिया भर में अपील की गई कि हर ऐसी जगह से बचा जाए, जहां भारी भीड़ जुटती हो। इस अपील का सबसे बड़ा असर हुआ उन जगहों पर, जहां लोग बुरे वक्त में अपनी फरियाद लेकर पहुंचते थे, यानि धार्मिक स्थल। हिंदुओं के मंदिर हो, या मुस्लिमों की हज यात्रा, या फिर ईसाईयों की वेटिकन सिटी, दुनिया के ज्यादातर प्रमुख धार्मिक स्थलों पर आमजनों के लिए ताला लगा दिया गया। इतिहास में पहली बार काबा की परिक्रमा बंद हुई। यीशु का जन्मस्थल माने जाने वाले चर्च ऑफ नेटिविटी भी बंद है। काशी विश्वनाथ, महाकालेश्वर, वैष्णो देवी में भक्तों का प्रवेश वर्जित है। कई धार्मिक ग्रंथों में कहा गया है कि एक वक्त आएगा, जब परमेश्वर इंसानों से खफा हो जाएगा। तो क्या यह ही वह वक्त है? जवाब है नहीं? क्योंकि वो ईश्वर जिसने हम सभी को जन्म दिया, उसने हमारे साथ ही इंसानियत को भी जन्म दिया, किसी धर्म को नहीं। संभवतः इसीलिए, आज जब ईश्वर का घर कही जाने वाली जगहें बंद है, तब सच्चे मायनों में ईश्वर उन जगहों तक सीमित न होकर, हम सभी के बीच हमारे लिए काम का रहा है। अपने आसपास देखिए, खबरों पर नज़र डालिए। क्या हर वो चिकित्सक जो इस वैश्विक महामारी और बंद के दौर में भी इस असाध्य समझे जाने वाले रोग के रोगियों की सेवा कर रहा है, वह उसी परमेश्वर का रूप नहीं। हर वह शख्स जो अपनी परवाह किये बिना कोरोना से जंग लड़ रहा है, जो लोगों के बीच शांति बनाने में मदद कर रहा है, जो वैश्विक मंदी के दौर में कोरोना से बचते हुए अपने देश की अर्थव्यवस्था की रफ्तार को बनाए रखने में मदद कर रहे हैं ताकि वैश्विक बंद की ओर बढ़ती इस दुनिया का असर देश के आम नागरिकों पर न पड़े, क्या वे ईश्वर का ही रूप नहीं लगते। दुनिया के हर धर्म में कहा गया है कि असली धर्म इंसानियत ही है, तो डर के इस माहौल में जरूरी है कि हम अपने सच्चे धर्म को निभाएं, उतनी ही ईमानदारी से, जितनी ईमानदारी से हम अपनी धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक स्थिति का पालन करते हैं।



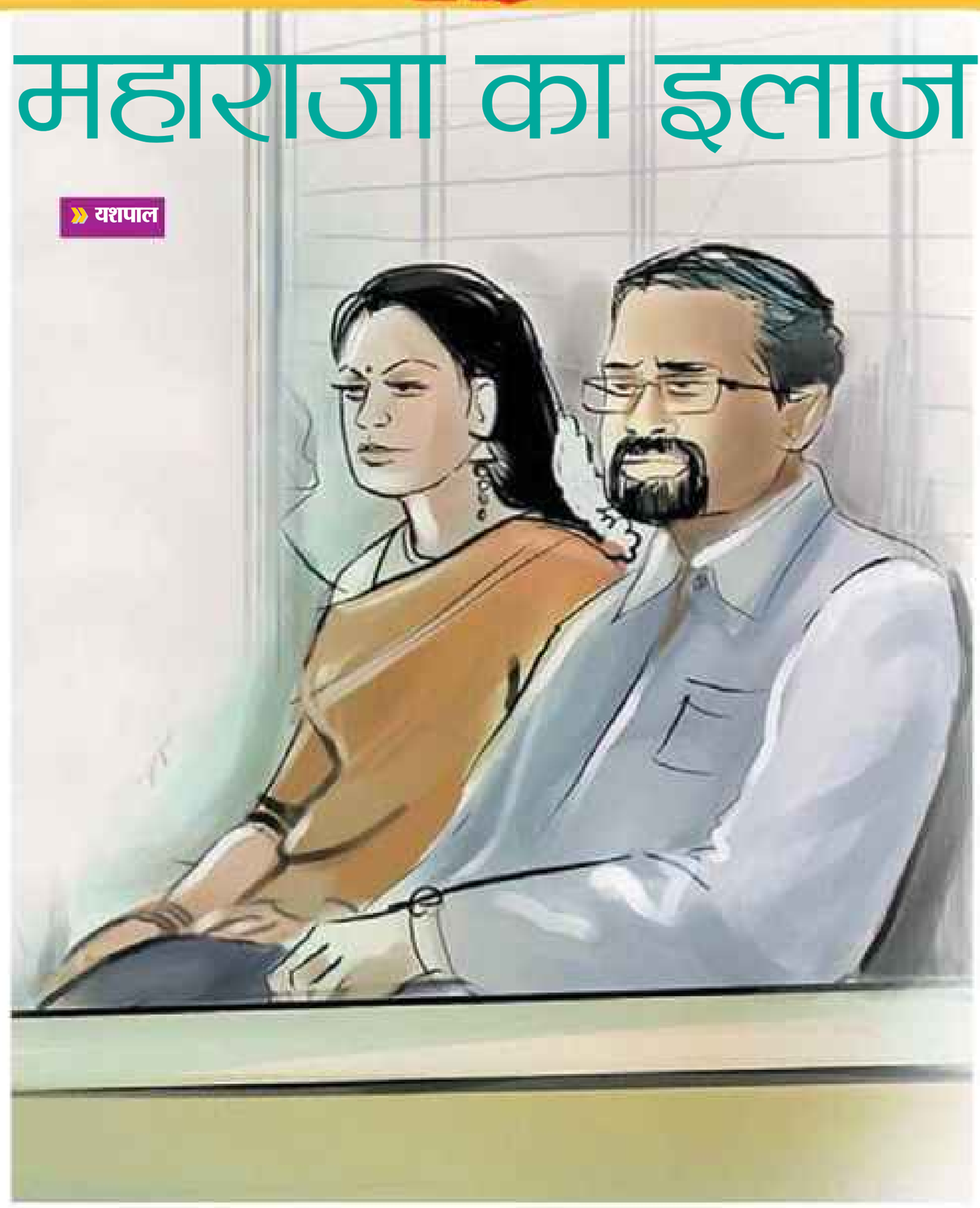
युद्ध के वजह से फैली, युद्धविराम की वजह भी बनी

यह जगविदित है कि स्पेनिश फ्लू के होने का कारण भारी संख्या में लोगों का आवागमन और विश्व युद्ध ही था। स्पेनिश फ्लू सैनिक और कामकाजी व्यक्तियों जैसे स्वस्थ लोगों को ही प्रभावित करता था। महज दो साल में करीब पांच करोड़ (अनुमानतः दो करोड़) लोगों की मौत इससे हुई थी और पचास करोड़ प्रभावित थे, जबकि उस समय दुनिया की आबादी एक अरब साठ करोड़ थी। लगातार युद्ध में संलग्न देशों में इस महामारी ने स्थिति ऐसी बना दी थी, कि युद्ध में शामिल शुरुआती देशों में से एक यानि जर्मनी के ही दस लाख सैनिक इससे पीड़ित थे, और युद्ध में मरने वाले अमेरिकी सैनिकों में से आधे सिर्फ इस बीमारी से मरे थे, दुश्मनों के हाथों नहीं। आज भी एचाएन1 स्वाइन फ्लू के रूप में इस महामारी के असर को देखा जा सकता है।

epaper.starsamachar.com

महाराजा का इलाज

» यशपाल



मोहाना की रियासत का बहुत नाम था। रियासत की प्रतिष्ठा के अनुरूप ही महाराजा साहब मोहाना की बीमारी की भी प्रसिद्धि हो गई थी। लखनऊ के गवर्नमेंट हाउस तक में महाराजा की बीमारी की चर्चा थी। युद्ध-काल में गवर्नर के यहां से युद्ध-कोष में चंदा देने के लिए पत्र आया था तो महाराजा की ओर से पच्चीस हज़ार रुपए का चेक दिया गया। गवर्नर के सेक्रेटरी ने भेंट की गई धन-राशि के लिए धन्यवाद देकर महाराज की बीमारी के लिए चिंता और सहानुभूति भी प्रकट की थी। वह पत्र कांच लगे चौखटे में मढ़वाकर महाराज के, ड्रॉइंग-रूम में लगा दिया गया। ऐसा ही एक पोस्टकार्ड महात्मा गांधी के हस्ताक्षरों में और एक पत्र महामना मदनमोहन मालवीय का भी विशेष अतिथियों को दिखाया जाता था। साधारण लोग-बाग् की तरह उन्हें कोई साधारण बीमारी नहीं थी। देश और विदेश से आए हुए बड़े से बड़े डॉक्टर भी बीमारी का निदान और उपचार करने में मुंह की खा गए थे। चिकित्सा-शास्त्र के इतिहास में ऐसा रोग अब तक देखा-सुना नहीं गया। ऐसे राज-रोग को कोई साधारण आदमी झेल भी कैसे सकता था।

महाराज गर्मियों में अपनी मसूरी की कोठी में जाकर रहते थे। सितंबर के महीने में महाराज के पहाड़ से नीचे अपनी रियासत में या लखनऊ की कोठी पर लौटने से पहले मसूरी में डॉक्टरों के मेले की धूम मच जाती। बात फैल जाती कि महाराज को देखने के लिए देशभर से बड़े-बड़े डॉक्टर आ रहे हैं। सब डॉक्टर बारी-बारी से महाराज की परीक्षा कर चुकते तो महाराज की बीमारी के निदान का निश्चय करने के लिए डॉक्टरों का एक सम्मेलन होता और फिर डॉक्टरों की सम्मिलित राय से महाराज की बीमारी पर एक बुलेटिन प्रकाशित किया जाता। सब डॉक्टर अपनी-अपनी फ़ीस, आने-जाने का किराया और आतिथ्य पाकर लौट जाते परंतु महाराज के स्वास्थ्य में कोई सुधार न होता। न उनके हृदय और सिर की पीड़ा में अंतर आता और न उनके जुड़ गए घुटनों में किसी प्रकार की गति आ पाती। नौ वर्ष से यह इसी प्रकार चल रहा था।

उस वर्ष बम्बई मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉक्टर कोराल के सुझाव पर डॉक्टर संघटिया मसूरी पहुंचे थे। वियना में काम कर चुके डॉक्टर संघटिया अनेक रोगों का इलाज साइकोसोमेटिक प्रणाली से करते थे। महाराज के यहां भी वियना से नए डॉक्टर के आने की बात से उत्साह अनुभव किया गया। उन्हें एक बहुत बड़े होटल में टिकाया गया। दूसरे दिन वे महाराज की कोठी में लाए गए। ड्रॉइंग-रूम में एक अमरीकन और एक भारतीय डॉक्टर भी मौजूद थे। डॉक्टर संघटिया ने बहुत ध्यान से दो घंटे से अधिक समय तक रोगी की परीक्षा की। पिछले वर्षों में महाराज के रोग के निदान के सम्बन्ध में डॉक्टरों के बुलेटिन देखे। तीसरे दिन दोपहर बाद डॉक्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया। डॉक्टर लोग प्राय: एक घंटे तक चाय, कॉफ़ी, व्हिस्की, जिन की चुस्कियां लेते आपस में बातचीत करते अपने मंतव्य लिखते रहे।

साढ़े-चार बजे महाराजा साहब को एक पहिए लगी आराम कुर्सी पर हॉल में लाया गया। महाराज के चेहरे पर रोगी की उदासी और दयनीय चिंता नहीं, असाधारण-दुर्बोध रोग के बोझ को उठाने का गर्व और गम्भीरता छाई हुई थी। दो डॉक्टरों ने महाराज को उपचार के लिए न्यू यॉर्क जाकर विद्युत चिकित्सा करवाने की राय दी। एक डॉक्टर का विचार था कि महाराज को एक वर्ष तक चेकोस्लोवाकिया में 'कालोंविवारी' के चश्मे में स्नान करना चाहिए। सोवियत का भ्रमण करके आए एक डॉक्टर का सुझाव था कि महाराज की काले समुद्र के किनारे सोची में 'मातस्यस्ता' स्रोत के जल से अपना इलाज करवाना चाहिए। महाराज गंभीरता से डॉक्टरों की राय सुन रहे थे। सत्ताइसवें नंबर पर डॉक्टर संघटिया से अपना विचार प्रकट करने का अनुरोध किया गया।

डॉक्टर संघटिया बोले,''महाराज के शरीर की परीक्षा और रोग के इतिहास के आधार पर मेरा विचार हैं कि यह रोग साधारण शारीरिक उपचार द्वारा दूर होना संभव नहीं है।''

महाराज ने नए, युवा डॉक्टर की विज्ञता के समर्थन में एक गहरा श्वास लिया, उनकी गर्दन ज़रा और ऊंची हो गई। महाराज ध्यान से नए डॉक्टर की बात सुनने लगे।

डॉक्टर संघटिया बोले, ''मुझे इस प्रकार के एक रोगी का अनुभव है। कई वर्ष से बम्बई मेडिकल कॉलेज के एक मेहतर को ठीक इसी प्रकार घुटने जुड़ जाने और हृदय तथा सिर की पीड़ा का दुस्साध्य रोग है।।।''

''चुप बदतमीज़ !''

सब डॉक्टरों ने सुना। वे विस्मय से देख रहे थे कि महाराज पहिए लगी आराम कुर्सी से उठकर खड़े हो गए थे। उनके बरसों से जुड़े घुटने कांप रहे थे और होंठ फड़फड़ा रहे थे, आंखें सुर्ख़ थीं।

''निकाल दो बाहर बदज़ात को! हमको मेहतर से मिलाता है।।। डॉक्टर बना है,'' महाराज क्रोध से चीख रहे थे।

महाराज सेवकों द्वारा हॉल से कुर्सी पर ले जाए जाने की परवाह न कर कांपते हुए पैरों से हॉल से बाहर चले गए।

दूसरे डॉक्टर पहले विस्मित रह गए। फिर उन्हें अपने सम्मानित व्यवसाय के अपमान पर क्रोध आया और साथ ही उन के होंठों पर मुस्कान भी फिर गई। डॉक्टर संघटिया ने सबसे अधिक मुस्कुराकर कहा,''ख़ैर, जो हो, बीमारी का इलाज तो हो गया!''

सेकेंड होम

रमा कल शाम से इस कोशिश में थी कि चन्दर से अकेले में बात करे। वह बताना चाहती थी कि दोपहर में बिटिया सुधा का फ़ोन आया था। कह रही थी मां बहुत दिन हो गए, आप लोगों से मिले। आ जाओ, सप्ताह भर के लिए। पर चन्दर शाम को आया। और रोज़ की तरह अपने हमउम्र दोस्तों के साथ गार्डन चला गया, फिर वहां से मंदिर। लौटा तो रात हो चुकी थी। सुबह उसे देर से जागने की आदत थी। जब तक वह जागी, चन्दर रोज़ की तरह सुबह की सैर को निकल चुका था। उसने चाय तैयार की और लॉन में लेकर पहुंची। सेकेंड होम में इस तरह के कोई दर्जनभर कॉटेज हैं। जिनमें उनकी तरह के जीवन की सांझ की ओर बढ़ रहे जोड़े रहते हैं।जब तक अख़बार देखने का काम ख़त्म हुआ। चन्दर सुबह की सैर से आ गया। उसने सीधे चन्दर को देखते हुए कहा,''मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।''

''हां, मैं अभी फ्रेश होकर आता हूं,'' कहकर वह अंदर चला गया। मुश्किल से आधा घंटा बीता होगा कि चन्दर उसके सामने था। पूरी तरह से तैयार, उसकी बात सुनने को। वह ऐसा ही था, बहुत जल्दी उसके मन को समझ जाता था। पूरे तीस वर्ष का साथ जो था उनका। आते ही बोला,''हां, कहो।''

वह एक सेकेंड मौन रही, फिर बोली,''सुधा का फ़ोन आया था कल।''

''क्या कह रही थी, सब ठीक है?''

''हां, अपने यहां बुला रही है। सात दिन के लिए क्या कहूं?''

''मना कर दो।''

''क्या सोचेगी?''

''कुछ नहीं,'' कहकर चन्दर क्षणभर रुका, फिर धीरे से उठकर उसके पास आ गया और पत्नी के दोनों कंधों पर अपने हाथ रखे। हल्का-सा दबाया। फिर बोला,''चिंता मत करो, डरो नहीं, अपने लिए सोचना सीखो।'' फिर रुककर पत्नी के चेहरे की ओर देखा, जहां सिर्फ़ हल्की-सी जिज्ञासा थी।

''अच्छा मैं अब चलता हूं, आज वक़ील से मिलना है।''

वह सोचने लगी। कितना बदल गया है चन्दर। अब फिर से पहलेवाले उत्साह में जीने लगा है। नहीं तो रिटायर होने के बाद तो जैसे हंसना ही भूल गया था।

वह भी अपने कमरे में चली गई। आज पड़ोस के कॉटेज में रहनेवाली मीरा और उसे ब्यूटी पार्लर जाना था। उसका मन नहीं किया कि वह जाने के बारे में विचार करे।

समय के साथ-साथ हर चीज़ बदलती है। पिछले हर माह में भी कितना कुछ बदल गया था। साल के शुरू में जब चन्दर अपनी पैंतीस साल की सरकारी नौकरी के बाद रिटायर हुआ। तो ऐसा लगा एक भरी-पूरी ज़िंदा तस्वीर में से किसी ने सारे रंग चुरा लिए हों। ख़ालीपन का एहसास बड़ी शिद्दत से महसूस होने लगा था। नौकरी थी तो लोगों की आवाजाही लगी रहती थी। चन्दर और वह दोनों अपने-अपने सर्कल में व्यस्त रहते थे। थोड़े दिन से ही ख़ालीपन से घबरा कर, वे बेटे रजत के यहां पहुंच गए। वह एक बड़ा अधिकारी था। पर वहां भी स्वागत में पहलेवाली गर्मजोशी नदारद थी। जैसे-तैसे थोड़े दिन गुज़रे होंगे कि पहले बहू और फिर बेटे के व्यवहार से एहसास होने लगा कि उनके यहां रहने में दिक़्क़तें हैं। छोटी-छोटी बातें, जैसे-बाबूजी इतनी जल्दी क्यों उठ जाते हैं? घूमने जाते हैं तो सुबह-सुबह दरवाज़ा क्यों बजाते हैं? नौकरों से क्यों बात करती हो? बाबूजी, बच्चों के सामने सिगरेट क्यों पीते हैं? मां हर वक्त किताब लिए क्यों बैठी रहती है? और आख़िरकार वे वापस आ गए, अपने में पहले से ज़्यादा ख़ालीपन भरे हुए। फिर वे दोनों आशा के पहियों पर सवार पहुंच गए बेटी सुधा के यहां। पर यहां भी थोड़े दिन में ही वे अवांछित होने लगे। दामाद, अक्सर नाक मुंह सिकोड़ने लगा। बच्चों की पढ़ाई में बाधा आ रही थी। और एक दिन बेटी ने ही कह दिया जाने को। और वे लौट आए चुपचाप, अपने लिए तयशुदा ख़ालीपन को स्वीकारने।

सब कुछ ऐसे ही चलता रहता। यदि चन्दर को क्लब में एक दिन राम न मिलता। साथ-साथ शाम गुज़ारते वे कब दोस्त बन गए पता ही नहीं चला। राम ने ही उसे सेकेंड होम के बारे में बताया। राम के पास भी ख़ालीपन की एक कहानी थी। एक ही बेटा था, जो पढ़-लिखकर विदेश जा बसा था। अब न तो वह अपने देश आता और न ही उन्हें बुलाना चाहता था। राम और उसकी पत्नी मीरा ने भी हारकर अपने ख़ालीपन से समझौता कर लिया।



दोनों ने अपनी दोस्ती का विस्तार किया। मीरा और रमा को एक-दूसरे से मिलाया। फिर एक दिन चन्दर और सुधा भी सेकेंड होम आ गए। उन्हें लगने लगा ज़िंदगी में अब भी खूबसूरती बाक़ी है। सेकेंड होम में वक्त गुज़ारने से दबी हुई रुचियां और इच्छाएं फिर नए आकार लेने लगीं। रमा को पढ़ने और लिखने का बहुत शौक़ था। इन दिनों वह घंटों कहानियों, उपन्यासों, कविताओं पर बात करती है। चन्दर को घूमने का और लोगों से मिलने का बड़ा शौक़ है। अक्सर वह सेकेंड होम के किसी साथी के साथ घूमने निकल जाता है।

और अब फिर सुधा का यह बुलावा। कैसे उसे मना करे? सोचते-सोचते, कब दोपहर हो गई पता नहीं चला। टेलीफ़ोन की घंटी बज रही थी। जल्दी से जाकर उठाया। दूसरी ओर सुधा ही थी। ''मम्मी, मेरी भैया से बात हुई। आप सेकेंड होम में रहने लगे! लोग क्या कहेंगे और हम क्या जवाब देंगे?''

रमा ने दो पल रुककर अपने आपको समेटा। और फिर पूरी ताक़त से अपने को व्यक्त कर दिया,''तो क्या करें, हम तो ज़िंदगी को तलाश रहे थे। रजत के पास गए और तुम्हारे पास भी। इस उम्र में क्या लोग ख़ुश रहना छोड़ देते हैं? और बताओ तो लोगों के डर से कोई जीना क्यों छोड़ दें?'' और उसने फ़ोन

epaper.starsamachar.com

दुनियाभर में कैसा है कोरोना का असर



पुरी। प्रसिद्ध सैंड आर्टिस्ट सुदर्शन पटनायक पुरी बीच में कोरोनावायरस और उसके प्रति डॉक्टर्स के समर्पण पर जागरुकता फैलाने के लिए अपने सैंड स्कल्पचर को अंतिम रूप देते हुए।



मुंबई। वह शहर जो कभी नहीं सोता है, यानि मुंबई। शहर का सबसे व्यस्त और देश के सबसे व्यस्त स्टेशंस में से एक छत्रपति शिवाजी टर्मिनस का नज़ारा इन दिनों कुछ ऐसा है।



जोहोर बाहरू। मलेशिया के जोहोर बाहरू को सिंगापुर से जोड़ने वाला जोहोर-सिंगापुर कॉज़वे बिल्कुल सुनसान है। पूरे मलेशिया को लॉकडाउन कर दिया है, ताकि कोविड-19 को फैलने से रोका जा सके।



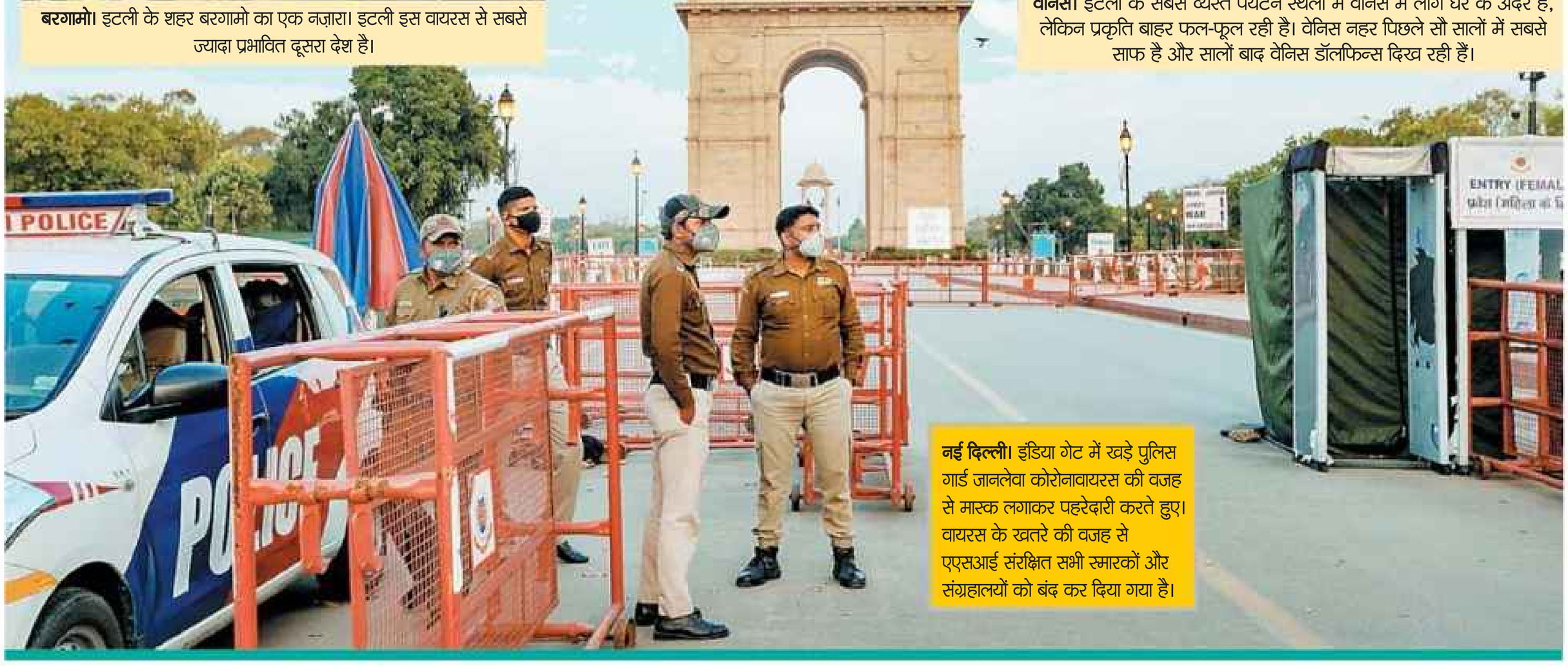
जयपुर। जंतर मंतर जयपुर की सबसे प्रसिद्ध जगहों में से एक है। जानलेवा कोरोनावायरस की वजह से यह बंद है। सुनसान पड़ा जंतर मंतर।



वेनिस। इटली के सबसे व्यस्त पर्यटन स्थलों में वेनिस में लोग घर के अंदर हैं, लेकिन प्रकृति बाहर फल-फूल रही है। वेनिस नहर पिछले सौ सालों में सबसे साफ है और सालों बाद वेनिस डॉलफिन्स दिख रही हैं।



बरगामो। इटली के शहर बरगामो का एक नज़ारा। इटली इस वायरस से सबसे ज्यादा प्रभावित दूसरा देश है।



नई दिल्ली। इंडिया गेट में खड़े पुलिस गार्ड जानलेवा कोरोनावायरस की वजह से मास्क लगाकर पहरेदारी करते हुए। वायरस के खतरे की वजह से एएसआई संरक्षित सभी स्मारकों और संग्रहालयों को बंद कर दिया गया है।

epaper.starsamachar.com

मार्निंग केयर रूटीन अपनाएं, फ्रेश व ग्लोइंग स्किन पाएं

सुबह खिली-खिली और तरोताजा त्वचा के लिए मार्निंग ब्यूटी या स्किन केयर को अपने रूटीन का हिस्सा बनाएं। यकीन मानिए अगर आपने इसे फॉलो कर लिया तो आपको स्किन से जुड़ी कई परेशानियों से राहत मिल जाएगी। आइए जानते हैं क्या हैं मार्निंग स्किन केयर टिप्स...

मार्निंग स्किन केयर रूटीन

हम घर से बाहर निकलते समय चेहरे पर बहुत कुछ अप्लाय करते हैं। दिनभर हमारी स्किन इन क्रीम्स की बदौलत ग्लो भी करती है, लेकिन सुबह उठते ही स्किन अपने असली रूप में आ जाती है। यानि बिना जान और बिना ग्लो के। लेकिन अगर आप हमारे बताए गए कुछ सिंपल ब्यूटी केयर टिप्स को सुबह-सुबह रोजाना फॉलो करेंगे तो पाएंगे एकदम फ्रेश स्किन।

शहद या एलोवेरा मास्क

कई लड़कों को मास्क लगाकर बैठना बोरिंग लगता है लेकिन यह जान लीजिए कि यह मास्क ही आपकी स्किन को नई लाइफ देता है। शहद या एलोवेरा के गुणों के बारे में तो सब जानते हैं। इस मास्क की खास बात यह भी है कि इस मास्क के लिए आपको ज्यादा कुछ करना नहीं है। शहद या एलोवेरा जो भी आपके पास हो उसे नैचुरल फार्म में चेहरे पर लगाएं। इस पैक को नीचे से ऊपर यानि अपवर्ड्स की ओर लगाएं। इस पैक की खास बात यह है कि आप इसे लगाकर अपने काम कर सकते हैं। 10 मिनट लगे रहने देने के बाद इसे धो लें। यह मास्क आपकी स्किन को रेजुविनेट के साथ-साथ स्किन टाइटनिंग भी करता है। शहद में एंटीऑक्सीडेंट प्रॉपर्टीज हैं तो वहीं एलोवेरा विटामिन ई से भरपूर है। आप चाहें तो बेहतर रिजल्ट के लिए दोनों को मिलाकर भी लगा सकते हैं।

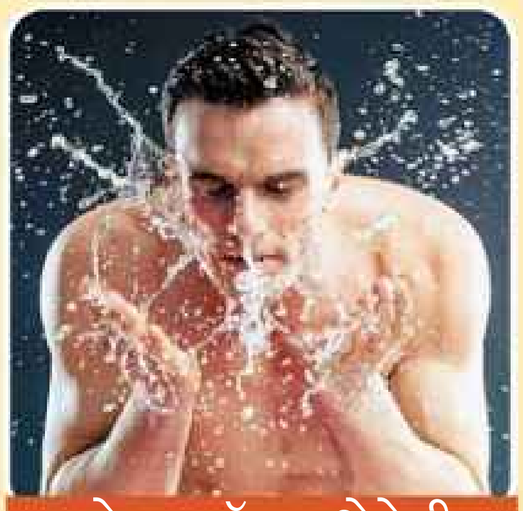


स्किन टोनर

टोनर स्किन के लिए सबसे जरूरी और उपयोगी चीज है। साथ ही यह ऐसा प्रोडक्ट है, जिसे आप बिना सोचे रोजाना भी यूज कर सकते हैं। लेकिन अधिकतर पुरुष ना तो इसका इस्तेमाल करते हैं और जो करते हैं वो सही ढंग से नहीं करते। ज्यादातर लोग सुबह की जगह रात को सोने से पहले टोनर का इस्तेमाल करते हैं। रात को सोने से पहले भी टोनर लगाया जा सकता है लेकिन अगर आप इसे अपने मार्निंग रूटीन में शामिल करेंगे तो बेहतर रिजल्ट मिलेगा। टोनर स्किन का पीएच लेवल बैलेंस करता है। साथ ही यह स्किन को हाइड्रेड भी करता है। कॉटन पैड में तीन चार बूंदें टोनर लेकर अपने चेहरे पर अप्लाय करें। ये तीन चार बूंदे आपके चेहरे पर जादुई असर करेंगी जो आपको दिनभर महसूस होगा।

क्लींजिंग ऑयल

मार्निंग स्किन केयर में क्लींजिंग ऑयल का अहम रोल है। अगर आप ये सोच रहे हैं क्लींजिंग ऑयल चेहरे को और ऑयली बना सकता है तो ऐसा नहीं है। क्लींजिंग ऑयल मिनरल बेस्ड ऑयल होता है जो ना तो स्किन को ऑयली बनाता है और न ही रूखा। क्लींजिंग ऑयल लाइट वेट प्रोडक्ट है, जो हर स्किन टाइप के लिए जरूरी होता है। यह ऑयल स्किन को ऑयली न करते हुए चेहरे के एक्सट्रा ऑयल और रात में लगाई गई क्रीम या किसी भी प्रोडक्ट को सॉफ्टली निकाल देता है। क्लींजिंग ऑयल की कुछ बूंदे ही आपके चेहरे को साफ करने के लिए कारगर हैं। हथेली पर दो से तीन बूंद ऑयल लें और अपने चेहरे पर लगाएं। सर्कुलेशन मोशन में स्किन की तीन से चार मिनट मसाज करें। अब हल्के कुनकुने पानी से चेहरा धो लें। यह ख्याल रखें की चेहरे को पोंछे नहीं बल्कि इसे नैचुरल तरीके से सूखने दें।



फ्रेश वॉटर थेरेपी

सुबह उठते ही सबसे पहले साफ पानी से अपना चेहरा धोएं। इस दौरान आपको न रगड़ने की जरूरत है न पोंछने की। चेहरे को पानी से 5 से 6 बार धोएं। पानी अपने आप में एक बड़ा ब्यूटी सीक्रेट है। कई लोग रात को नाइट क्रीम या फेस क्रीम से मसाज करके सोते हैं। इससे स्किन रिपेयर तो होती है लेकिन सुबह उठने पर रातभर की जमी चिकनाई और गंदगी को यह पानी निकाल देता है। अगर आप पानी से चेहरा साफ करने के साथ ही सुबह उठते ही खाली पेट एक ग्लास पानी पी लें तो यह भी आपकी स्किन के लिए बहुत अच्छा रहेगा। खाली पेट पानी पीने से शरीर के सारे टॉक्सिन्स निकल जाते हैं।

सीरम

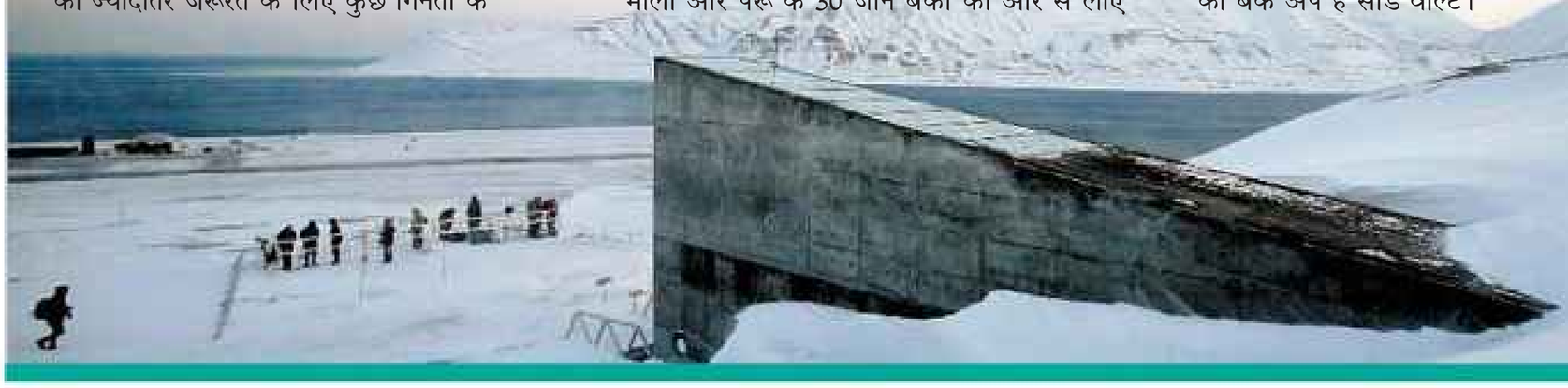
सीरम को अगर स्किन का टॉनिक कहा जाए तो गलत नहीं होगा। मार्निंग स्किन रूटीन का सबसे अहम हिस्सा सीरम है। क्योंकि यही सीरम हमारे चेहरे पर एक शील्ड की तरह काम करता है। सीरम हमें दिनभर प्रदूषण से लड़ने के लिए प्रोटेक्शन देता है। सीरम लेते समय ये ध्यान रहे कि सीरम एंटीऑक्सीडेंट रिच हो यानी जिसमें एंटीऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में रहे और हां इसकी कीमत को ना देंखे। अच्छे सीरम के लिए अगर जेब थोड़ी ढीली भी करनी पड़े तो भी पीछे ना हटें। सीरम आपकी पूरी स्किन में एबजार्ब हो जाएगा और स्किन को दिनभर के लिए देगा प्रोटक्शन।

महामारी से लेकर प्रलय तक के लिए तैयार आर्कटिक वॉल्ट

किसी महामारी के फैलने या परमाणु युद्ध छिड़ने की स्थिति में खाने का संकट पैदा होने पर यह गुंबद काम आएगा। पृथ्वी के सुदूर आर्कटिक क्षेत्र में स्थित इस इमारत में दुनिया भर से लाकर अनाज की अहम किस्मों को रखा जाता है। हाल ही में आर्कटिक में बने अपनी तरह के इस खास स्टोर रूम में बीज की दस लाखवीं किस्म को जोड़ा गया है। वॉल्ट कहलाने वाले इस खास गुंबद में अनाजों की अलग अलग किस्में बचा कर रखी जाती हैं ताकि किसी संकट की स्थिति में इस खजाने से उसके बीज निकाले जा सकें और उन्हें मानवता के लिए फिर से उपलब्ध कराया जा सके। यहां रखे बीजों को खराब होने से बचाने के लिए इसके दरवाजे भी बहुत कम ही खोले जाते हैं।

» **ग्लोबल सीड वॉल्ट :** विश्व भर में खाने की चीजों की आपूर्ति निर्बाध गति से बनाए रखने में इसकी अहम भूमिका मानी जाती है। असल में हम अपनी ऊर्जा की ज्यादातर जरूरत के लिए कुछ गिनती के अनाजों पर ही निर्भर करते हैं। आर्कटिक इलाके में स्थित स्वालबार्ड ग्लोबल सीड वॉल्ट में चावल, गेहूं और कुछ अन्य प्रमुख अनाजों की किस्में रखी गई हैं। साल 2008 में एक पहाड़ के पास बनाई गई इस स्टोरेज फेसिलिटी की शुरुआत इस मकसद से की गई थी कि अगर कभी परमाणु युद्ध छिड़ जाए या कोई महामारी फैल जाए तो उस स्थिति में प्रभावित इलाकों में फिर से उगाने के लिए खाद्यान्नों की किस्में बचाई जा सकें। इसीलिए इसका लोकप्रिय नाम 'डूम्स डे वॉल्ट' यानि प्रलय गुंबद है।

» **कहां है स्थित :** यह जगह नॉर्वे और उत्तरी ध्रुव के बीच में स्थित है और यहां गिनती के इंसान ही रहते हैं। साल में केवल कुछ ही बार इसके दरवाजे खोले जाते हैं ताकि बीजों की देखभाल के लिए जो जरूरी काम हों वे किए जा सकें। हाल के समय में 25 फरवरी 2020 को इसे खोला गया जब भारत, माली और पेरू के 30 जीन बैंकों की ओर से लाए गए बीज यहां जमा करवाए गए। लेकिन ऐसी आपातकालीन स्थिति के अलावा शांतिकाल में भी इसके कुछ इस्तेमाल होते हैं। जैसे कि अगर कभी पौधों की नई किस्में विकसित करने वाले ब्रीडरों को जरूरत हो तो उन्हें यहां से बैक अप किस्में मुहैया कराई जाती हैं। पहले के समय में विश्व में 7,000 विभिन्न तरह के पौधे उगाए जाते थे। विशेषज्ञ बताते हैं कि अब इंसान अपनी ऊर्जा की 60 फीसदी जरूरत केवल तीन मुख्य किस्मों – मक्का, गेहूं और चावल – से ही लेने लगा है। इसका बुरा पहलू यह है कि जलवायु परिवर्तन के चलते उपज खराब होती है तो पूरी आबादी की फूड सप्लाई प्रभावित होगी। वॉल्ट का प्रबंधन करने वाले जर्मनी के बॉन में स्थित संगठन क्रॉप ट्रस्ट के कार्यकारी निदेशक श्टेफान श्मित्स कहते हैं, 'धरती पर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने की वैश्विक प्रणाली का बैक अप है सीड वॉल्ट।'



हर नौ में से एक व्यक्ति भूखा

संयुक्त राष्ट्र के विश्व खाद्य कार्यक्रम के अनुसार, आज भी विश्व में हर नौ में से एक व्यक्ति रात को भूखा सोने को मजबूर है। वैज्ञानिक बता चुके हैं कि मौसम के अनियमित पैटर्न से आगे चल कर दुनिया में खाने की मात्रा और गुणवत्ता दोनों ही घटती जाएगी। सन 2015 में ऐसी नौबत आई थी जब पहली बार रिसर्चरों को वॉल्ट से बीज निकालने पड़े थे। सीरिया के गृह युद्ध के दौरान जब अलेप्पो शहर की तबाही में वहां के सीड बैंक भी नष्ट हो गए तो वॉल्ट से बीज निकाले गए थे। दो साल बाद इन बीजों को उगाकर फिर से उसका सैंपल स्वालबार्ड वॉल्ट में जमा कराया गया। बीते साल नॉर्वे ने करीब एक साल तक चले इस इमारत के अपग्रेड प्रोग्राम में 1.1 करोड़ डॉलर खर्च किए। आर्कटिक के बेहद ठंडे माहौल में इसे यह सोच कर बनाया गया था कि अगर संकट की स्थिति में पावर फेल हो जाए तो भी यहां रखे बीज जल्दी खराब नहीं होंगे। लेकिन असल में अब आशंका यह भी है कि जलवायु परिवर्तन के कारण खुद प्रलय गुंबद पर भी मुसीबत आ सकती है।

epaper.starsamachar.com



बजट में भूटान की सैर

अगर आपने भूटान के लिए पहले ही किसी टूर एजेंसी से अपनी ट्रिप बुक करा ली है फिर तो कोई झंझट ही नहीं है, वो लोग आपकी सारी जरूरतों और सुविधाओं का ख्याल रखते हैं। ये आर्टिकल और इसमें दी गई सलाह उन लोगों के लिए है जो सस्ते और बजट में ट्रैवेल करना चाहते हैं। मैंने और मेरे दोस्त ने 7 दिन के लिए भूटान का प्लान बनाया। इसके लिए मैंने इंटरनेट पर बजट में घूमने के लिए जानकारी हासिल करनी चाही लेकिन ऐसा कुछ मिला नहीं। हम फिर भी भूटान घूम कर आए और जो हमने सीखा और अनुभव किया वो आपको बताता हूं। साथ ही ये भी कि सस्ते में आप भूटान कैसे घूम सकते हैं।



भूटान में घूमना-फिरना

- जब भी आप किसी जगह पर पहुंचते हैं तो वहां घूमने-फिरने के लिए किसी पास के बस या टैक्सी स्टैंड पर जाकर पूछताछ कीजिए। ये याद रखिए कि सभी जगहों पर बस की सुविधा उपलब्ध नहीं होती। हो सके तो पहले से ही बुकिंग करा लें और उसी हिसाब से अपनी ट्रिप का प्लान बनाएं, वरना काफी परेशानी होगी।

थिम्फू

- थिम्फू में दो बस स्टैंड हैं। एक है सिटी बस स्टैंड और दूसरा है थिम्फू बस स्टैंड। सिटी बस स्टैंड से आपको पास की जगहों पर जाने के लिए बस मिल जाएगी। लेकिन थिम्फू बस स्टैंड से भूटान के बड़े शहरों में जाने के लिए ही बस मिलेंगी।
- टैक्सी के मुकाबले सिटी बस काफी सस्ती पड़ती हैं। भूटान में आपको बस में चढ़ने के लिए पहले से ही टिकट लेनी पड़ती है, ऐसा नहीं है कि आप कहीं भी बस में चढ़े और कंडक्टर को पैसे देकर टिकट ले ली। बसों के लिए टिकट आप सिटी बस स्टैंड और कुछ चुनिंदा दुकानों से खरीद सकते हैं।

विकास कुमार

- थिम्फू से पारो जाने के लिए सीमित संख्या में ही बस उपलब्ध हैं। धुग ट्रांसपोर्ट की दो बसे रोज़ाना चलती हैं, एक सुबह 9 बजे और दूसरी दोपहर 2 बजे। एक या दो बसें किसी और भी ट्रांसपोर्ट की चलती हैं लेकिन उनकी पहले पूछताछ कर लें।
- दावा ट्रांसपोर्ट की दो बसें पारो से फवेनशॉलिंग जाती हैं। एक सुबह 9 बजे और दूसरी दोपहर में 2 बजे। मेटो ट्रांसपोर्ट की भी 3 बसें हैं जो सुबह 8:30, 9:00 और दोपहर 2 बजे निकलती हैं। लेकिन इनके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता इसलिए भारत पेट्रोलियम पंप के सामने बने इनके ऑफिस से पूछताछ कर लें।

फवेनशॉलिंग

- फवेनशॉलिंग से थिंपू पहुंचने के लिए 5 घंटे लगते हैं। सड़क के रास्ते आपको सुंदर नजारा देखने को मिलेगा। यात्रा करने से एक या दो दिन पहले से ही टिकट बुक करा लें, उसी दिन टिकट बुक कराने का जोखिम न उठाएं।
- पारो से टाइगर्स नेस्ट जाने के लिए कोई भी कैब ड्राइवर एक व्यक्ति के 300 से लेकर 500 रुपये तक लेगा। अगर आप कुछ पैसे बचाना चाहते हैं और आपको थोड़ा पैदल चलने में कोई परेशानी नहीं है तो ड्राइवर को बोलिए कि वो आपको टाइगर्स नेस्ट जंक्शन पर उतार दे। इसके लिए शेयरिंग कैब में आपको 50 रुपये देने होंगे। यहां से ट्रैक के शुरुआती पॉइंट तक पहुंचने के लिए 1.15 घंटे का समय लगेगा। ये सड़क शानदार है और यहां आप कुछ अच्छी फोटो क्लिक कर सकते हैं। आपका पैदल चलना बेकार नहीं जाएगा।
- अपना परमिट हमेशा अपने साथ रखें क्योंकि चेक पोस्ट पर इसकी जरूरत पड़ती रहती है। मैंने अपना परमिट अपने बैग में रख दिया था जिसे कैब की छत पर से उतारने में थोड़ा वक्त लग गया। ये ड्राइवर अपने टाइम के पक्के होते हैं इसलिए वो मुझसे थोड़ा गुस्सा भी हो गया था।

भूटान में खाना-पीना

- भूटान में नॉन-वेज खाना हर कोने में मिल जाता है। वैसे वेजीटेरियन फूड मिलना इतना भी मुश्किल नहीं है लेकिन अगर अच्छा वेजीटेरियन चाहिए तो इसको ढूंढने में थोड़ा समय बिताना पड़ेगा।
- भूटान में शराब सस्ती है। ये हर स्टोर और शॉपिंग मॉल में मिल जाएगी। ये ऐसा है जैसे आपको भारत में केक मिल जाता है। लेकिन सिगरेट लगभग बैन हैं इसलिए महंगी भी है। आप रेड राइस बीयर ट्राई कर सकते हैं, जो टेस्ट में काफी अच्छी है।
- भूटान में मेरे एक दोस्त ने कहा कि भारत के पास 20 तरह के मसाले हैं लेकिन भूटान में सिर्फ एक है और वो है मिर्च। ये इसे अपने हर खाने में डालते हैं। मैंने सिर्फ मिर्च से बना हुआ खाना भी देखा। ये भारत में मिर्च से बने हुए खाने से ज्यादा गर्म और तीखा होता है।

भूटान से जुड़ी कुछ ज़रूरी बातें

» परमिट लेने के लिए आपको इन चीजों का ध्यान रखना होगा।

1) आपकी हाल की पासपोर्ट साइज फोटो
2) वैध पासपोर्ट और वीजा (ये भारतीय, बांग्लादेशी और मालदीव वालों को छोड़कर बाकी सबके के लिए जरूरी है) या वोटर आई कार्ड
3) होटल कन्फर्मेशन की कॉपी
4) ट्रैवल आइटनरी।

» ये डॉक्यूमेंट्स की लिस्ट इमीगिरेशन ऑफिस के नोटिस बोर्ड पर मिल जाएगी। आइटनरी के लिए, एक कोरे कागज पर तारीख, सोर्स और जिन जगहों पर घूमना है और रहने वाले हैं, ये सब लिखें। एक सेट बना लें, जिसमें परमिट एप्लिकेशन, डॉक्यूमेंट्स की कॉपी और फोटो हो।

» अगर आप स्टूडेंट हैं तो अपना स्टूडेंट आई कार्ड ले जाना न भूलें। इमिग्रेशन ऑफिस में आपसे ये दिखाने के लिए कहा जा सकता है। इस कार्ड के कई फायदे भी आपको मिलेंगे भूटान में कई जगहों की एंट्री पर आपको 50 प्रतिशत की छूट मिल जाएगी।

» इमिग्रेशन ऑफिस में परमिट दिखाकर आप सरकार का बी-मोबाइल (भूटान टेलीकॉम) सिम कार्ड खरीद सकते हैं। इसका नेटवर्क कवरेज इतना अच्छा है कि आपको फजोडिंग मठ की ऊंचाई पर भी नेटवर्क मिलेगा। इस सिम कार्ड से इंटरनेट यूज करने के लिए आपको अपने एपीएन में कुछ बदलाव करने होंगे।

भूटान में कहां रहें?

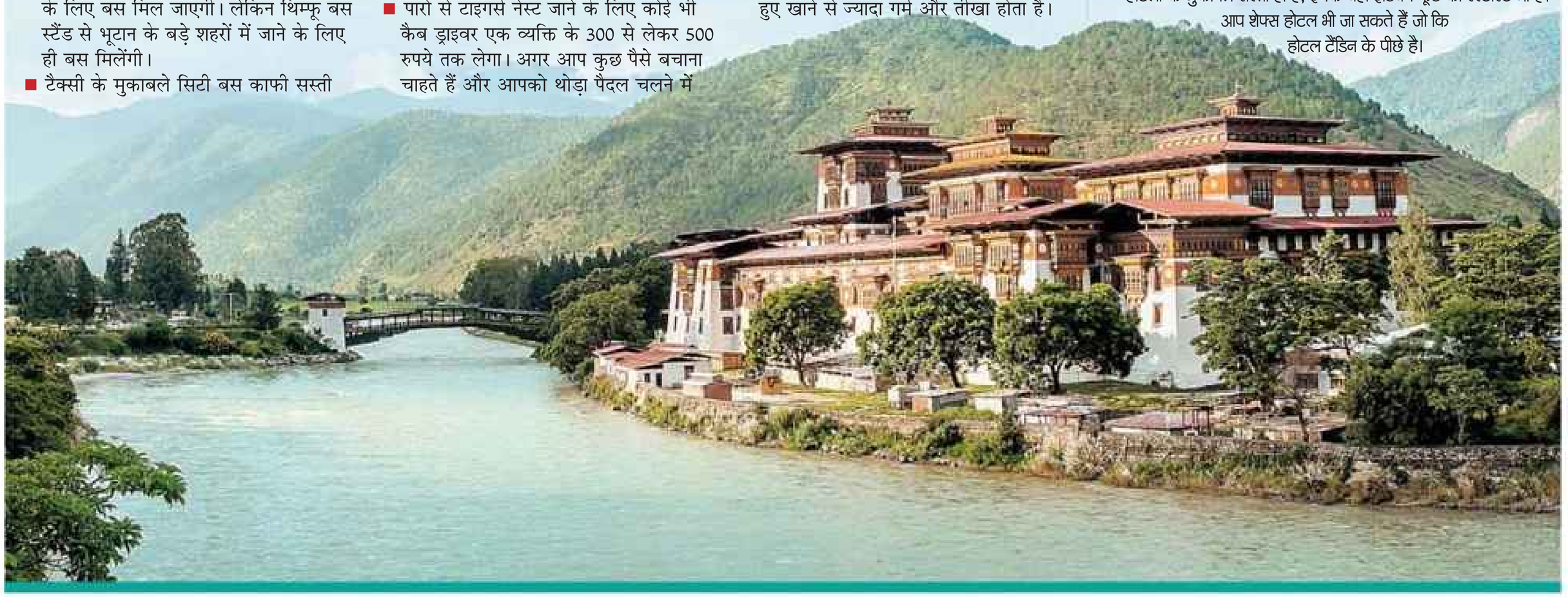
हां, भूटान में ठहरना आपको थोड़ा महंगा पड़ सकता है। लेकिन अगर आप चाहें तो अपने बजट का होटल ढूंढ सकते हैं। आपको सड़क पर उतरना होगा और हर कोने को सर्च करना होगा।

» जयगांव में जाकर हनुमान मंदिर धर्मशाला के बारे में पता करें। मैंने सुना है कि 10 रुपए की कम कीमत में भी एक रात के लिए कमरा देते हैं। लेकिन यहां अक्सर पहले से ही बुकिंग होती है क्योंकि ये शादी के लिए अपनी बिल्डिंग किराए पर दे देते हैं।

» आप जयगांव में ही साहू सेवा ट्रस्ट जा सकते हैं। यहां के रूम और टॉयलेट साफ सुथरे होते हैं। इसके लिए एक रात का किराया दो लोगों के लिए 300 रुपए पड़ेगा।

» थिम्फू में मैं अपने एक दोस्त के साथ रुका था, इसलिए थिंपू में मुझे होटल्स की कोई जानकारी नहीं है।

» पारो में होटल टैंडिन में जा सकते हैं। वो एक रात रुकने के लिए 700 रुपए लेते हैं, जिसमें आपको डबल बेड और टीवी मिलता है जो उस जगह पर बाकी होटलों के मुकाबले सस्ता ही है, इनके यहां इंडियन फूड का रेस्टोरेंट भी है। आप शेफ्स होटल भी जा सकते हैं जो कि होटल टैंडिन के पीछे है।



epaper.starsamachar.com

वैदिक ज्योतिष



ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास
कोतवाली बाजार जबलपुर म.प्र. मो. 09826621998

दिनांकः 22 मार्च से 28 मार्च 2020 तक

साप्ताहिक ग्रहस्थिति

इस सप्ताह सूर्य मीन राशि में, मंगल धनु राशि में ता. 22 को 2/25 दिन से मकर राशि में, बुध कुम्भ राशि में, गुरू धनु राशि में, शुक्र मेष राशि में ता. 28 को 8/25 दिन से वृषभ राशि में, शनि मकर राशि में, राहु मिथुन राशि में, केतु धनु राशि में और चन्द्रमा कुम्भ, मीन, मेष, और वृषभ राशि में संचरण करता है।

ग्रहयोगों का प्रभाव

शनि और मंगल मकर राशि में संयोग कर रहे हैं, आगे गुरू भी मकर राशि में आ रहा है, जिसके योग से देश में राजनैतिक परेशानियां बढ़ेंगी, कुछ प्रान्तों में राजनैतिक साम्प्रदायिक तनाव और अशांति हो सकती है। प्राकृतिक आपदा और अग्निकाण्ड से भी नुकसान की सम्भावना है। कहीं कहीं मंदी बनेगी, रूई, सोना, चांदी, तांबा, गुड, खांड, घी, तेल, तिलहन, ऊन में तेजी होगी। अनाज और दालवाना में भी तेजी सम्भव है। ता0 28 मार्च को शुक्र वृषभ राशि में आकर स्वगृही होगा, जिसका प्रभाव कपास, गुड, खांड, चांदी, तिलहन के बाजार में देखा जायेगा, शुक्र मंदी का सूचक है। राजस्थान, महाराष्ट्र, पांडुचेरी के कुछ भागों में वायु वेग के साथ वर्षा सम्भव है।

पर्व/व्रत/त्यौहार

22 मार्च- शिव चर्तुदशी व्रत, मां हिंगलाज जयंती, 23 मार्च- श्राद्ध अमावस्या, 24 मार्च- स्नानदान अमावस्या, 25 मार्च- बैठकी, नवरात्रारम्भ, चेटीचंद, संत झूलेलाल जयंती, गुडी पडवा, 26 मार्च को- सिंघारा दोज, 27 मार्च- गणगौर तीज व्रत, सौभाग्य सुंदरी तीज, अरूंधती व्रत, 28 मार्च- वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत।



मेष

सोच समझकर ही आप आगे बढ़ना चाहेंगे, आप पूरे होश एवं जोश के साथ कार्य में जुट जायेंगे, भविष्य में लाभ की योजनाओं की शुरूआत हो सकती है अनुसंधान एवं कला के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। उच्च पदस्थ लोगों के साथ सामूहिक कार्य में भाग लेंगे, जीवनसाथी और बच्चों को आपसे अपेक्षायें बढ़ेंगीं।



वृष

अपने मन में चल रहे अन्तर्द्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे।



मिथुन

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी।



कर्क

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े। सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है।



सिंह

सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, करियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी।



कन्या

इस सप्ताह अपनों के व्यवहार से खिन्नता हो सकती है, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं।



तुला

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह करियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें। दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा। कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें।



वृश्चिक

व्यापारिक और करियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है।



धनु

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जमीन जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है।



मकर

कार्यक्षेत्र में करियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा।



कुंभ

अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, विशिष्टजनों से प्रशंसा मिलेगी, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय वजह से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे।



मीन

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गों के स्वास्थ्य पर ध्यान दें।

संसार का मेला

पिता की उंगली पकड़ कर मेले में घूमते हुए वह बालक तरह-तरह की चीजों, खिलौनों से सजी दुकानों की चमक-दमक देखकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। तभी भीड़ का एक रेला आया और बालक से पिता की उंगली छूट गई। बालक घबरा कर रोता हुआ मेले में अपने पिता को ढूंढने की कोशिश कर रहा था। पिता की उंगली छूटने मात्र से वह दुखी हो रहा था। मेले की रौनक और साज सामान जिन्हें देख वह पहले खुश हो रहा था, अब अच्छे नहीं लग रहे थे।

संसार के मेले में हमारी स्थिति भी ऐसी ही है। संपूर्ण वैभव होते हुए भी यदि धर्म की पकड़ छूट गई, परमपिता परमात्मा से अलग हो गए तो सब कुछ होते भी आनंद अनुभव नहीं कर सकते। धर्म का आलंबन रहने से वही वैभव जो सुख का कारण बना हुआ था धर्म से च्युत हो जाने पर सुखाभास नहीं देता। शाश्वत सुखानंद के लिए धर्म का आश्रय लेकर आत्मचिंतन अनिवार्य है। यदि समाज से धर्म को निकाल दिया जाए तो समाज धर्म से विमुख होकर अर्थहीन एवं अस्तित्वहीन हो जाएगा। मनुष्य की शारीरिक भूख मिटाने के लिए तो भौतिक पदार्थों का सेवन काफी है, परंतु मानव की अंतस् की भूख मिटाने के लिए आदिकाल से ही धर्म आगे आया है।

धर्म की जीवन में सकारात्मक भूमिका है। धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। हमारी नकारात्मक प्रवृत्तियों पर रोक लगा कर हमें दूसरों के प्रति संवेदनशील बनाता है। धर्म ना हो तो जीवन सुविधापूर्ण भरण-पोषण, व्यापार-व्यवसाय तक सीमित हो मात्र एक जरूरत बन कर रह जाएगा, जबकि वास्तविक जीवन केवल जरूरत के अतिरिक्त बहुत कुछ और भी है। जरूरत के पार ही तो है जीवन का मधुरिम काव्य। जिसका जीवन केवल जरूरतों का जोड़ है उसने जीवन को जाना ही नहीं। कुछ तो जीवन में ऐसा हो जो जरूरत के बाहर है। जिसके करने की कोई जरूरत तो नहीं है, फिर भी हम करें तो उससे आत्मिक-सुख की अनुभूति हो। क्योंकि ठीक इसी अनुभूति के माध्यम से धर्म-मार्ग से हो कर हमारा परमात्मा से संबंध जुड़ता है।

भूख मिटाने के लिए गेहूं जरूरी है, फिर गुलाब की क्या जरूरत है? जीना है तो रोजी-रोटी जरूरी है लेकिन जीवन में गेहूं ही गेहूं हो और गुलाब न हो तो ठीक चलेगा क्या? रोटी-रोजी तक ही सीमित हो गए तो जीवन के भीतर सुवास कहां से आएगी, सौंदर्य कैसे पैदा होगा? वैसे आज की सोच के हिसाब से जरूरत तो धर्म की भी नहीं, परमात्मा की भी नहीं है। इन दोनों के बिना काम ज्यादा सुविधा से चलता है। क्योंकि फिर बेईमानी करो, चोरी करो तो कोई अड़चन नहीं, झूठ बोलो तो कोई भय नहीं। हमारे पास होगा केवल सांसारिक सुविधाओं का आडंबर। बचेगी केवल धन-आभूषण से भरी तिजोरी, बैंक में जमा पूंजी। उनमें वृद्धि करने की चिंता।

यह सब होते हुए भी फूल और उसकी सुगंध तो नहीं मिलेगी हमें, न हम मीरा की भक्ति से अभिभूत होंगे। राधा-कृष्ण की सरसता, परस्पर स्नेह की पवित्रता से वंचित हो जाएंगे हम। सीता के समर्पण को कैसे आत्मसात करेंगे? महावीर और गौतम का त्याग, राम की मर्यादा, कृष्ण के जीवन-सार के बिना जीवन को जीना कह सकेंगे? नहीं न। इसीलिए संसारिक उपलब्धियों के साथ-साथ परमात्मा और धर्म की उंगली के जरिए उनका सान्निध्य महसूस करते रहना भी नितांत जरूरी है।

epaper.starsamachar.com

बूझो तो जाने

एक ऐसा काम, जिसे आदमी जिंदगी में 1 बार करता है, पर औरत हर रोज करती है... बताओं वो क्या है???

चार हैं रानियां और एक हैं राजा,
हर नए काम में उनका अपना साझा।

गाय दूध देती है, और मुर्गी अंडा देती है, तो बताओ ऐसा कौन है जो दूध और अंडा दोनों देता है?

बेशक ना हो हाथ में हाथ,
पर जीता है वो आपके साथ,
बताओ वो है कौन सी बात?

चार ड्राईवर एक सवारी,
जिसके पीछे दुनिया सारी? बताओ क्या..

बिना बुलाये डॉक्टर आये,
सुई लगाकर भाग जाये। बताओ क्या?

महेश के पिता के पांच लड़कों के नाम?
गनेश, सुरेश, रमेश, अल्पेश बताओ इनमें से पांचवे का नाम क्या होगा?

शादी से पहले दुल्हन का बाप दूल्हे को क्या देता है, जो शादी के बाद वापिस ले लेता है?

हरी डिब्बी, पीला मकान,
उसमें बैठे कल्लू राम।

दो अक्षर का मेरा नाम
सरको ढकना मेरा काम।

उत्तर : मांग में सिंदूर भरना, अंगूठा और अंगुलियां, दुकानदार, परछाई, अर्थी, मच्छर, महेश, सुख और चैन, पपीता और बीज, टोपी

प्रेरक कथा

टीना की सूझबूझ...

'**दरियां** ले लो.., दरियां..., रंग-बिरंगी मजबूत टिकाऊ दरियां'। जैसे ही टीना ने आवाज सुनी, वह बस्ता जस का तस छोड़कर बाहर की तरफ भागी। अम्मा चिल्लाईं, 'अरे कहां भाग रही है, पढ़ाई तो पूरी कर ले?' परंतु टीना को तो भागना ही था दरीवाले की आवाज पर। 'पता नहीं क्या हो गया है इस टीना को? दरीवाले की आवाज आती है तो सब काम छोड़कर भाग जाती है।' अम्मा मन ही मन बुदबुदातीं। उन्होंने टीना के बापू से शाम को इस बाबत चर्चा की। परंतु बाबू जमुनालालजी ने हंसकर कहा, 'तुम भी कहां की बातें ले बैठती हो, अरे बच्ची है, दरीवाले की आवाज सुनकर दरी देखने दौड़ जाती है तो इसमें क्या बुराई है? मैं भी तो बचपन में ठेले वालों की आवाज सुनकर खाने की थाली छोड़कर भाग जाता था। 'बात तो सच थी वह भी तो जब छोटी थी तो आसमान में हवाई जहाज की आवाज सुनकर बाथरूम में से आधी नहाई ही बाहर दौड़ पड़ती थी। खैर, बात आई-गई हो गई।

दूसरे दिन मोहल्ले में हल्ला मचा कि रतनलालजी के घर में चोरी हो गई। पुलिस की गाड़ी हूटर बजाती हुई आई और चोरी वाले घर के सामने भीड़ लग गई। रतनलालजी एक दिन पहले ही से नागपुर गए थे और सुबह ही वापस आए थे। घर का सारा सामान उन्होंने बिखरा पाया और अलमारी का ताला टूटा पड़ा था। चोरों ने अलमारी की नकदी और सोने-चांदी के जेवरों पर हाथ साफ कर दिया था। पुलिस अपनी कागजी खानापूर्ति करके चली गई थी। 'मैं जानती थी आज कहीं-न-कहीं चोरी होगी', टीना धीरे-धीरे बड़बड़ा रही थी। 'क्या कह रही है बिटिया, क्या बुदबुदा रही है?' अम्मा नीलू ने प्रश्न किया तो वह बोली, 'कुछ नहीं अम्मा, बाद में बताऊंगी।' नीलू सोच रही थी कि टीना को जाने क्या हो गया है? कुछ तो बड़बड़ाती रहती है। उस दिन रविवार था। जमनालालजी का आज अवकाश था। कभी-कभी वे अवकाश के दिन भी कार्यालय चले जाते थे। काम ही इतना ज्यादा था कि छुट्टी के दिन भी कार्यालय में बैठना पड़ता था किंतु आज उनका मूड था कि घर पर ही पत्नी और बच्चों के साथ रहकर वे थोड़ा मनोरंजन करें। खाना खाया और टीना के साथ लूडो खेलने बैठ गए। अचानक दरीवाले की आवाज सुनाई पड़ी। टीना कुछ चौंकी और उठकर बाहर भागने लगी, परंतु कुछ सोचती हुई वापस पलटी और जमुनालालजी से बोली, 'बापू आज आप भी चलिए न दरीवाले को देखने।' 'क्या, मैं चलूं, क्यों, क्या मैं बच्चा हूं?' वे ठहाका मारकर हंसने लगे। 'जा, तू ही जा, उस दरीवाले को देखने।' इतने सारे प्रश्न सुनकर पहले तो वह कुछ नर्वस हुई किंतु तुरंत संभल गई। 'नहीं बापू कुछ खास बात है, मैं आपको... कुछ बताना चाहती हूं।' वह थोड़ा झिझकी और उनका हाथ पकड़कर बाहर खींचने लगी। आखिर जमनालालजी थे तो एक बेटी के बाप ही, उठकर खड़े हो गए। 'कहां ले चलती है चल, ये लड़की भी...' यह कहते हुए उसके पीछे चल दिए।

बाहर उन्हें वह दरीवाला दिखाई दिया। दूसरी गली की ओर वह मुड़ रहा था। टीना उन्हें घसीटकर दूसरी गली के किनारे तक ले गई। धीरे से बोली, 'बापू यह गली तो आगे बंद है, इसमें से ही किसी घर में आज चोरी होगी।' 'क्या पागलों-सी बातें करती है? क्या तू सीआईडी है? तुझे कैसे पता?' 'बापू, मैं सच्ची कह रही हूं। इस गली का कोई घर मालिक जरूर ताला लगाकर बाहर गया होगा। उसके यहां चोरी होगी।'

जमुनालालजी को याद आया कि इस गली में रहने वाले उसके एक मित्र रतनलालजी सुबह ही नागपुर एक विवाह समारोह में गए हैं। उन्होंने पूछा, 'तुमने यह कैसे अंदाज लगाया कि आज यहां चोरी होगी?' 'बापू, मैं तीन माह से इस दरी वाले को देख रही हूं। जब भी यह आता है और जिस गली में जाता है, वहां चोरी होती है।' 'मगर तुम गारंटी से कैसे कह सकती हो? अंदाज गलत भी हो सकता है। किसी पर शक करना...?' वे वाक्य पूरा कर पाते, इसके पहले ही टीना चहक उठी। 'बापू, अपने घर के सामने पुलिस अंकल रहते हैं, तो उन्हें बताने में क्या हजज़ है', टीना ने अपनी छोटी-सी बुद्धि का गोला दागा। शाम को जमुनालालजी ने अपने पड़ोसी पुलिस इंस्पेक्टर शुक्लजी को टीना की बातों से अवगत कराया। उन्होंने सादी वर्दी में एक पुलिस वाले को उस गली के आसपास तैनात कर दिया। रात को तो कमाल ही हो गया। दो चोर रंगेहाथों घर के फाटक के भीतर घुसते हुए पकड़े गए। दूसरे दिन उस दरीवाले को भी पकड़ लिया गया। थाने में ले जाकर जब उसकी पिटाई हुई तो उसने दो दर्जन चोरियों का खुलासा किया, जो पिछले तीन साल से शहर में हो रही थीं और पुलिस पकड़ने में नाकाम रही थी। पुलिस इंस्पेक्टर शुक्ल ने टीना से पूछा, 'बेटी, तुमने कैसे जाना कि इस दरीवाले का चोरियों से कुछ सबंध है?''अंकल, अपने मुहल्ले में जब लगातार दो चोरियां हुईं तो मैंने अनुभव किया कि चोरी उसी दिन होती है, जब यह दरीवाला आता है। फिर अगली बार जब यह दरीवाला आया तो मैंने उसका चोरी से पीछा किया। उसी दिन उस गली में चोरी हुई, जिस गली में वह फेरा लगाने भीतर तक गया था। फिर तो यह निश्चित हो गया कि चोरी और इस दरीवाले के बीच कुछ तो संबंध है और मैं अपने बापू को साथ ले गई।' टीना की सूझबूझ से चोरियों का भंडाफोड़ हो गया। अब दरीवाला नहीं आता। आएगा कहां से? वह तो हवालात में है। टीना की अम्मा को भी अब टीना के बाहर भागने की चिंता नहीं सताती।

जानें इन देशों के बारे में

अर्जेन्टीना : अर्जेन्टीना दक्षिणी अमेरिका का दूसरा सबसे बड़ा देश है। इसकी राजधानी ब्यूनस आयर्स है जो देश का प्रमुख बंदरगाह भी है। कौरदोबा और रोजेरिओ आदि देश के दूसरे महानगर हैं। यहाँ की राजकीय भाषा स्पैनिश है और अधिकतर लोग रोमन कैथोलिक धर्म का पालन करने वाले हैं। मुद्रा का नाम अर्जेंटाइनी पेसो है। यहाँ पर स्थित इगुवाजु प्रपात दुनिया के सबसे बड़े जल प्रपातों में से एक है जिसकी ऊँचाई 80 मीटर और चौड़ाई 2,700 मीटर है। दक्षिण अमेरिका का सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला एकॉन्कागुआ भी यहीं स्थित है जिसकी ऊंचाई 6,960 मीटर है। इसकी पश्चिमी सीमा पर ऐंडीज पर्वतमाला है जहाँ कोंडोर नाम का दुर्लभ पक्षी पाया जाता है। गिद्ध प्रजाति के ये पक्षी आकार में बहुत बड़े होते हैं। दुनिया के सबसे पुराने डायनोसोर के कुछ जीवाश्म भी इस देश में पाए गए हैं। यहाँ की भूमि उपजाऊ है और प्रमुख पैदावार गेहूँ, मक्का, सोयाबीन, फल और चाय आदि हैं। फुटबॉल यहाँ का सबसे लोकप्रिय खेल है।

ब्राजील : ब्राजील दक्षिणी अमेरिका का सबसे बड़ा और विश्व का पाँचवाँ सबसे बड़ा देश है। ब्राजिलिया यहाँ की राजधानी है और रियो डि जेनेरियो सबसे बड़ा शहर है। यहाँ की राजकीय भाषा पुर्तगाली है पर अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पेनिश भी बोली जाती है। यह विश्व का सबसे बड़ा रोमन कैथोलिक देश भी है। यहाँ की मुद्रा ब्राजीलियन रियाल है। खेलों में यह देश मोटर रेसिंग और फुटबॉल के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है, जहाँ पेले और रोनालडो जैसे विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी हुए हैं।ब्राजील औद्योगिक देश है पर प्राकृतिक संसाधनों की भी यहाँ कमी नहीं। सोना, प्लैटिनम और पेट्रोलियम यहाँ के प्रमुख खनिज हैं। साथ विश्व की सबसे बड़ी नदी अमेजॉन की उपजाऊ घाटी है जहाँ फल, फूल और अनाज की अच्छी पैदावार होती है। यह नदी विश्व के 20 प्रतिशत मीठे पानी का स्रोत है।

तारे वास्तव में वहाँ है ही नही जहाँ ये हमें दिखाई देते हैं

रात में हम तारों को देखते हैं तथा बचपन से देखते आ रहे हैं इनकी अवस्था पर हमें विशवास कर लिया है परन्तु वास्तव में तारे उस स्थान पर होते ही नही जहां ये हमें दिखाई देते हैं ये तो वह आभासी प्रकाश है जो हजारों वर्ष पूर्व उस तारे ने छोड़ा था तथा आज हमारी आँखों की रेटिना तक पहुंच पाया है। समझने के लिए उदाहरण लीजिएः मान लीजिए एक तारा हमसे 50 प्रकाश वर्ष दूर है तथा भारत की आजादी के वर्ष 1947 को उसमें एक भयंकर विस्फोट हुआ तथा चमक उत्पन्न हुई अब इस चमक से उत्पन्न प्रकाश ने 1947 में तारे के पास से चलना शुरू किया तो लगभग पचास वर्ष पश्चात् यह चमक हमें वर्ष 1997 में दिखाई देगी।

गुदगुदी

गूगल कितना भी बड़ा सर्च इंजन क्यों ना हो... मंदिर से गुम हुई चप्पल तो वह भी नहीं ढूंढ सकता है।

»»»»»»»»»»»»»»»

पोस्टमैन ने दरवाजा खटखटाया तो सोनू ने बियर की बोतल के साथ गेट खोला।
पोस्टमैनः बेटा, पापा घर पर हैं?
सोनूः मुझे देखकर लगता है कि पापा घर पर होंगे?

»»»»»»»»»»»»»»»

मौसम विभाग का भरोसा ना करें क्योंकि इनके अधिकारी खुद रोज शाम को चपरासी से कहकर जाते हैं... ऑफिस की खिड़कियां बंद करके रखना, बारिश का कोई भरोसा नहीं है!

»»»»»»»»»»»»»»»

चीन वालों की जितनी आंखें खुलती हैं उतनी तो हम... बचपन में प्रार्थना के समय खोल लिया करते थे।

»»»»»»»»»»»»»»»

टीचरः सोनू, तुम्हारे पापा क्या करते हैं?
पप्पूः जो मम्मी बोलती हैं।

»»»»»»»»»»»»»»»

पतिः डॉक्टर साहब कह रहे थे कि जो लोग ज्यादा बोलते हैं, उनकी उम्र कम हो जाती है।
पत्नीः तभी तो सब कहते हैं कि मैं 40 की उम्र में भी 20 की लगती हूं।

»»»»»»»»»»»»»»»

यह तो अच्छा हुआ कि 1947 में वॉट्सऐप नहीं था, वरना आजादी के लिए कोई जंग में उतरता ही नहीं... लोग घर बैठकर मेसेज करते, इस मेसेज को इतना फैलाओ कि अंग्रेज खुद भारत छोड़कर भाग जाएं!

»»»»»»»»»»»»»»»

रामूः तुम्हें ये दो मेडल क्यों मिले हैं?
श्यामूः दोनों मेडल गाने के लिए मिले हैं।
रामूः ...लेकिन एक मेडल छोटा और एक बड़ा क्यों है?
श्यामूः छोटा मेडल गाना गाने के लिए और बड़ा मेडल गाना बंद करने के लिए!

»»»»»»»»»»»»»»»

रमेश को अनजान नंबर से एक फोन आया।
महिलाः क्या आप शादीशुदा हैं?
रमेशः नहीं लेकिन आप कौन हैं?
महिलाः तुम्हारी पत्नी, घर आओ फिर बात करती हूं।

»»»»»»»»»»»»»»»

पत्नीः सुनिए, मुझे एक नई साड़ी दिला दीजिए।
पतिः ...लेकिन तुम्हारी अलमारी तो साड़ियों से भरी पड़ी है, फिर नई क्यों?
पत्नीः वे सभी साड़ियां तो मोहल्ले वालों ने देख ली हैं।
पतिः हम साड़ी क्यों खरीदें, मोहल्ला ही बदल लेते हैं!

»»»»»»»»»»»»»»»

समय बहुत तेजी से बदल रहा है। पहले लोग अपनी सैलरी छिपाते थे.... फिर जूलरी और अब गैलरी छिपाते हैं।

»»»»»»»»»»»»»»»

पतिः मेरे सीने में बहुत दर्द हो रहा है, जल्दी से ऐंबुलेंस बुलाओ।
पत्नीः फोन करना है। अपने मोबाइल का पासवर्ड बताओ।
पतिः रहने दो, अब ठीक लग रहा है।

»»»»»»»»»»»»»»»

भिखारीः आपके पड़ोसी ने पेट भर कर खाना खिलाया है, आप भी कुछ दीजिए न।
पप्पूः यह लो हाजमोला।

»»»»»»»»»»»»»»»

ट्रेन में बायो टॉयलेट बनाने का संता ने भारी विरोध किया!
संता ने कहा कि मैथ्स और कॉमर्स वाले कहाँ जायेंगे?

पाठक अपने सुझाव, जिज्ञासाएं, लेख, कलात्मक कार्य, चुटकुले इत्यादि इस पते पर भेज सकते हैं। स्टार सन्डे, स्टार समाचार, मुख्तियार गंज, सतना- 485001
Email: starsunday.starsamachar@gmail.com, Contact: 9425813221

epaper.starsamachar.com

सांच कहै ता मारन धावै



■ जयराम शुक्ल

विकास की हवस ने आंखों का पानी सोख लिया

हमारे गांव के सीवान पर महुआ के दो बड़े दरख्त थे। उम्र कोई दो सौ वर्ष। उन्हीं के बगल से गांव जाने का रास्ता गुजरता था। पहले ढर्रा था, फिर मुरम वाली सड़क से पक्की डामर सड़क होते हुए तरक्की ऐसी हुई कि अब शानदार दो लेन वाली कंक्रीट की सड़क मेरे गांव से गुजरते हुए आगे जाकर इलाहाबाद और बनारस जाने वाले राष्ट्रीय राज मार्ग से मिल जाती है। पर इस तरक्की में दो सौ सालों से आंधी, तूफान, अकाल, सुकाल झेलते तने रहने वाले ये पुरखे-से वृक्ष शहीद कर दिए गए।

हम लोग जब जबलपुर से रीवा अपने गांव जाते थे तो अम्मा की सख्त हिदायत रहती थी कि जब वहां पहुंचें तो रुक कर महुए के उन दोनों पेड़ों को प्रणाम कर लिया करें। उनमें ग्राम देवता निवास करते हैं जो हमारे गांव की रक्षा करते हैं।



शादी-ब्याह या संतान होने के बाद गांव में प्रवेश के पहले इनकी पूजा होती थी। मैं बचपन से ही इन पेड़ों को बुजुर्ग से भाव से देखता था। इन हरे-भरे पेड़ों के फड़फड़ाते पत्ते गांव का कुशल-मंगल प्रवेश करते ही बता देते थे। लेकिन ये सरकार की अधोसंरचना विकास के आड़े आ गए और बिना गवाह, बिना सुनवाई के 'कत्ल' कर दिए गए! यही हश्र गांव में घुसते ही तालाब के किनारे खड़े उस पीपल का भी हुआ। कोई दो-ढाई सौ साल का इतिहास अपने में जज्ब किए पीपल को वहीं आरे से काट कर 'मृत्युदंड' दे दिया गया। हाथ-पांव आरियों से काट कर अलग कर दिए गए। जब गांव जाता हूं तो कुल्हाड़ी की खटाक और आरा मशीन की खरखराहट अवचेतन मन में गूंजती है।

हमारे देश में विकास ऐसा ही रोबोटिक है। न कोई संवेदना, न किसी रिश्ते की परवाह, न दर्द, न करुणा। विकास के आड़े जो भी आएगा, मारा जाएगा। जीडीपी और विकास दर बढ़ाने के लिए यही शर्त है, जिसके चलते हरे-भरे पुराने दरख्तों का विकास दर में तब तक कोई योगदान नहीं, जब तक उन्हें काट कर आरा मिल न भेज दिया जाए। हरहराती नदियों का बांधा जाना और गांव के गांव को डुबो देना विकास दर के लिए अनिवार्य है। सीधी खड़ी पहाड़ियों को जब तक सड़कों में न बदल दिया जाए, तब तक ये निरर्थक है।

विकास का यह नए जमाने का फलसफा है। यही समूचे देश में चौतरफा चल रहा है। एक मित्र ने संदेश के साथ फोटो भेजी कि भोपाल के हवाई अड्डा रोड के सुंदर हरे-भरे दरख्तों को काटने की तैयारी की जा रही है। जो बन पड़े इसके लिए, कुछ करिए। हम-आप क्या कर सकते हैं।

अब अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाना है तो इन बेचारे वृक्षों को अपनी जान देनी ही पड़ेगी! जीडीपी और विकास दर का मामला है। हालांकि बड़े जीडीपी और भारी विकास दर वाले यूरोपीय देशों के बारे में सुना है कि कोई पेड़ सड़क के आड़े आ जाए तो इंजीनियर उसका नक्शा बदल देते हैं, क्योंकि वे खुद भी संवेदनशील होते हैं और इसके लिए जनता भी सड़क पर आ जाती है। अगर पेड़ या कोई प्राकृतिक संरचना हटाना जरूरी हुआ भी तो काटने की बजाय उनकी 'लिफ्टिंग' की जाती है, यानी एक जगह से दूसरी जगह पर लगा दिया जाता है।

हमारे यहां तो सड़क की योजना बाद में बनती है, कुल्हाड़ी पहले चलनी शुरू हो जाती है। ताक में बैठे रहते हैं टाल, पल्प, पेपर, प्लाई उद्योग वाले। हमारे रीवा जिले से पांच राष्ट्रीय राज मार्ग गुजरते हैं। सभी का विस्तारीकरण हो रहा है। चारों तरफ दरख्तों का कत्लेआम हो रहा है। दो या तीन सौ साल तक के आम, इमली, जामुन, पीपल, नीम के पेड़ लाखों की संख्या में काट डाले गए। जो बचे हैं, काट डाले जाएंगे।

इन बेजुबानों की कौन सुने! ये वोट नहीं हैं! कंठी-माला लेकर धर्म का जाप करने और संस्कृति बचाने वाले कहां गए? रीवा से देश का सबसे पुराना राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरता है। कहते हैं इसे शेरशाह सूरी ने उत्तर और दक्षिण को जोड़ने के लिए बनवाया था। पहले इसे ही ग्रांड ट्रंक रोड कहा जाता था। अंग्रेजों के जमाने में तैयार किए गए रीवा स्टेट गजेटियर में एक ब्रिटिश यात्री लेकी की डायरी का जिक्र है। सत्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में रीवा के राजा अजीत सिंह के समय मिस्टर लेकी ने इस राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे घने फलदार वृक्षों और निश्चित दूरी पर कुओं और बावड़ियों का खूबसूरती से ब्योरा दिया है।

बनारस और इलाहाबाद से आने वाले साहित्यकारों ने सड़क के किनारे के आम्रकुंजों का अपनी रचनाओं में वर्णन किया है। ये सब काट डाले गए कोई डेढ़-दो सौ वर्ष पुराने वृक्ष लाखों की संख्या में। इन्हें बचाया जा सकता था। लेकिन इसके बारे में कौन सोचता, जिसकी आंखों का पानी बचा हो। विकास की हवस ने आंखों का पानी सोख कर संवेदनाओं को मरुभूमि में बदल दिया है। कौन याचना सुने, कौन इंसाफ करे!

संपर्क: 8225812813



आर. के. सिन्हा

कौन खा रहा है हमारे बैंकों को नोच-नोच कर

यस बैंक में जिस तरह की लोन देने के नाम पर लूट मची हुई थी उससे यह साफ हो गया है कि देश के बैंकिंग सेक्टर में नए सिरे से समीक्षा कर प्राण फूंकने की जरूरत हैं। बैंकिंग सेक्टर तो जंगग्रस्त हो गया लगता है। अब यस बैंक के देशभर में फैले लाखों खातेदार अपना पैसा निकालने के लिए मारे-मारे घूम रहे हैं। आपको याद ही होगा कि पिछले साल के अंतिम महीनों में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने पंजाब एंड महाराष्ट्र को-ऑपरेटिव बैंक पर अलग-अलग तरह की कई पाबंदियां लगा दी थीं। जिसके बाद इसके खातेदारों को अपने ही बैंक से अपना पैसा निकालना मुश्किल हो गया था।

भ्रष्टाचार की काली कमाई

यकीन मानिए कि सरकारी क्षेत्र के बैंकों के हर माह करीब 90 मुलाजिमों को चोरी-चकारी, भ्रस्टाचार और अकर्मण्यता के पुख्ता कारणों से नौकरी से बर्खास्त किया जा रहा है। इनमें से ज्यादातर पर भ्रष्टाचार में फंसे होने के पुख्ता साक्ष्य हैं। ये काम करने की बजाय काली कमाई का धंधा करते रहे हैं। इनका जमीर मर गया था। ये देश को धोखा दे रहे थे। इनके संबंध में यह जानकारी सेंट्रल विजिलेंस कमीशन ने दी है। जहां तक यस बैंक की बात हैं तो वहां इसके फाउंडर राणा कपूर और सरकार व आरबीआई के बीच काफी लंबे समय से चूहे-बिल्ले का खेल चल रहा था। दरअसल, राणा कपूर बैंक के सीईओ पद से हटाए जाने के बाद लंदन चले गए थे। इसके बाद सरकार व आरबीआई ने उन्हें बुलाने के लिए जाल बुना। उन्हें लगा कि शायद उन्हें फिर सीईओ बनाया जा सकता है। लेकिन, राणा को भारत आने के बाद लगा कि उनके चारों तरफ जांच एजेंसियों का शिकंजा कस रहा है तो वह फिर भागने की फिराक में लग गये थे। लेकिन यह हो नहीं सका। अब उनके काले कारनामे सबके सामने धीरे-धीरे रहे हैं। दरअसल देश के बैंकिंग सेक्टर को विगत लंबे समय से नोच-नोच कर खाया जा रहा था। बैंकों में घोर अराजकता और अव्यवस्था फैली हुई थी। अब सरकार ने जब बैंकिंग की दुनिया के लुटेरों पर शिकंजा कसा तो उनके कारनामे सबके सामने आने लगे। गौर करें कि इस लूट के खेल में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों से लेकर प्राइवेट बैंक और कोपरेटिव बैंक सब के सब शामिल हैं। यानी पूरे कुएं में ही भांग पड़ी हुई है।

विलफुल डिफॉल्टर

अब हाल जरा पंजाब नेशनल बैंक की भी सुन लें। यहां जान-बूझकर कर्ज न चुकाने वाले बड़े कर्जदारों पर बकाया धन बढ़कर 15,490 करोड़ रुपये पहुंच गया। इसमें वे कर्जदार भी शामिल हैं जिन पर बैंक का बकाया 25 लाख रुपये या उससे अधिक का है। पीएनबी में उन विलफुल डिफॉल्टरों की बड़ी तादाद शामिल हैं, जो क्षमता होने के बावजूद अपना कर्ज नहीं चुका रहे हैं। यानी कि ये लुटेरे इस सिस्टम में व्याप्त कमियों का ही अपने हक में लाभ उठा रहे हैं। ये अब भी बाज नहीं आ रहे। अब आप समझ सकते हैं कि हमारे यहां बैंकिंग क्षेत्र की साख किस हदतक धूल में मिल चुकी है। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा सरकारी वाणिज्यिक बैंक है और भारत के लगभग 700 शहरों में इसकी करीब पौने पांच हजार शाखायें हैं। अविभाजित भारत के लाहौर शहर में 1895 में स्थापित पीएनबी को ऐसा पहला भारतीय बैंक होने का गौरव प्राप्त है जो पूर्णत: भारतीय पूंजी से प्रारम्भ किया गया था। इसकी अनेक शाखाएं देश से बाहर भी हैं। इतने अहम बैंक की आज दुर्दशा सबके सामने है। अब इसमें मुनाफा कमाने वाले ओरिएंटल बैंक आफ कॉमर्स का विलय हो रहा है ताकि इसकी हालात में कुछ सुधर आ सके। लेकिन, यह भी तो ग्राहकों की आंखों में धूल झोंकने जैसी ही कारवाई हुई न?



जिनकी छुट्टी हुई

अब आईसीआईसीआई बैंक की बात कर लें। इसमें अपने खास ग्राहकों को मोटे लोन देने के कारण इसकी एमडी और सीईओ चंदा कोचर की तो बैंक से छुट्टी हो चुकी है। कोचर और उनके परिवार के सदस्यों पर वीडियोकॉन को लोन देने और हितों के टकराव का मामला है। राणा कपूर और चंदा कोचर से पहले या कहा जाए कि विगत कुछ समय के दौरान देश के कई दिग्गज बैंकर फंसे हैं। यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया (यूबीआई) की पूर्व चेयरमेन और मैनेजिंग डायरेक्टर (सीएमडी) अर्चना भार्गव के खिलाफ भी करप्शन का केस दर्ज किया जा चुका है। रिटायरमेंट की उम्र आने से पहले ही बैंक की नौकरी को खराब सेहत का बहाना बनाकर छोड़ने वाली अर्चना भार्गव पर आरोप है कि वर्ष 2011 में केनरा बैंक का कार्यकारी निदेशक रहते हुए और 2013 में यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया की सीएमडी के तौर पर उन्होंने उन कंपनियों को दिल खोलकर लोन दिलवाया जो उनके पति-पुत्र के स्वामित्व वाली कंपनियों से डील कर रही थीं। यानि पति और पुत्र के जरिये कमीशन खाने का धंधा। सीबीआई ने अगस्त, 2014 में सिंडिकेट बैंक के सीएमडी एस के जैन को 50 लाख रुपये की घूस लेने के आरोप में गिरफ्तार किया था। उन्होंने एक कंपनी को मोटा लोन दिलवाया था।

लोन दिलवाने का काला धंधा

बैंकों में लोन दिलवाने का काला धंधा पुराना है। लोन दिलवाने के नाम पर बैंकों के छोटे-बड़े कर्मी अपनी कमीशन लेते रहे हैं। लेकिन, राणा कपूर जैसे बड़े बैंकरों पर आरोप है कि वे उन कंपनियों से मोटी कमीशन लेते थे, जिन्हें वे बड़ा लोन दिलवाते थे। ये कमीशन उनकी तीनों बेटियों को मिलता था। चूंकि, पहले कोई जवाबदेही नहीं होती थी इसलिए चौतरफा लूट जारी थी। एक बात तो माननी होगी कि बैंकों से लोन लेकर उसे न वापस करने वालों की बहुत लंबे हाथ और ऊपर तक पहुंच रही हैं। वे बैंकों के शिखर अफसरों को लोन की कुछ फीसद राशि घूस में देने का वादा करते और निभाते भी रहे हैं। नतीजे में बैंक अफसर उनके लोन क्लीयर करते रहे हैं। कुल मिले लोन पर मोटी घूस मिलती है। 100 करोड़ रुपये के लोन पर 50 से 75 लाख रुपए तक घूस मिलती रही है। और ये पंजरी रूपी घूस चेयरमेन से लेकर दूसरे बड़े अफसर बांटकर खाते रहे हैं। यह किसी को कहने-बताने की जरूरत नहीं हैं कि बैंकिंग सेक्टर में फैली सडांध को अब दूर करने की जरूरत है। बैंकों में बिना सोचे-समझे लोन देने का सिलसिला चलता रहा है।

epaper.starsamachar.com